International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-11-2018; Accepted: 15-12-2018
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 15-16

पुष्टि मार्गीय मंदिरों के प्रमुख उत्सवों में संगीत

देशराज वशिष्ठ
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पुष्टि मार्गीय मंदिरों की एक वृहद परम्परा अविरल रूप से प्रवाहित हो रही है। जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत को विशेष रूप से विकसित किया है। जो विशेषतः भक्ति संगीत से संबंधित है। पुष्टि मार्गीय मंदिरों की प्रतिदिन की अष्टछाप सेवा के अतिरिक्त प्रमुख उत्सवों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। इन उत्सवों में जिन पदों का गायन किया जाता है वह अष्टछाप सेवा के पदों से भिन्न रहतें है। उत्सवों के कीर्तन की कुछ विशेषताएं है जो गायन के साथ वाद्य विशेष के संगीत से प्रकट होती हैः–

1. जब गायन के पदों को पखावज के साथ झांझ वज रही हो तो वहां के विशेष उत्सव का होता है।
2. उत्सव के साथ इन मंदिरों में पदों का सामूहिक गान किया जाता है यदि किसी मंदिर में एकल गायन भी होता है तो वहां कीर्तनियों का साथ देने के लिए अन्य व्यक्तियों की आवश्यकता आवश्यक रहती है। तात्पर्य यह है कि विशेष उत्सव के कीर्तन में वृन्दगान का विशेष महत्व रहता है।
3. उत्सव विशेष में उसी उत्सव से संबंधित विशेष पदों के गायन का अलग विधान है। उदाहरण के लिए महाप्रभु का जन्म उत्सव, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव आदि।
4. उत्सव महोत्सव के समय दैनिक क्रम की झांकियों के समय में भी बदलाव आ जाता है तथा भगवान के दर्शन अधिक समय तक खुले रहते है। इन उत्सवों में होली, हिण्डोले आदि उत्सव विशेष है।

पुष्टि मार्गीय मंदिरों में जिन प्रमुख उत्सवों को मनाया जाता है उनमें दशहरा, दीपावली, जयन्तियां (सम्प्रदाय में कुल 5 जयन्तियां मनाई जाती है।) (1) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (2) रामनवमी (3) नर्सिंग जयन्ती (4) वामन द्वादशी तथा आचार्य वल्लभ के वंशजों के उत्सव सम्मिलित रहते है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी इस सम्प्रदाय का प्रमुख तथा सर्वाधिक वैभव सम्पन्न उत्सव है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है पुष्टि मार्गीय सम्प्रदाय में जन्माष्टमी की बधाई आठ से पन्द्रह दिन पूर्व ही प्रारम्भ हो जाती है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन का उत्सव सर्वाधिक विस्तार वाला होता है। श्री त्रिभुवनदास, पीताम्बर दास लिखित कीर्तन प्रणाली संग्रह के अनुसार जन्माष्टमी महोत्सव कीर्तन प्रणाली तथा उसमें प्रयुक्त रागों को बताया गया है। इन रागों में सर्वप्रथम शंखनाद किया जाता है उसके पश्चात् राग देवगंधार, में पदों का गायन किया जाता है। उसके पश्चात् राग धनाश्री, विलाबल, आसावरी, सारंग, मालवगौरी, नायकी, बिहाग, रामकली आदि रागों में विभिन्न पदों का गायन किया जाता है।[1]

नन्द महोत्सव

नन्दोत्सव कृष्ण जन्माष्टमी के दूसरे दिन प्रातःकाल से ही मनाया जाता है। इसमें गायन वादन के अतिरिक्त नृत्य की भी योजना होती है। श्रीकृष्ण का जन्म होने पर सभी को अपार हर्ष हुआ है इस भावना को मूर्तरूप देने के लिए मन्दिरों में दर्शकगण सामूहिक रूप गायन तथा नृत्य करते दिखाई देते है। यह उत्सव विशेष रूप से गोकुल में धूमधाम से मनाया जाता है। इस उत्सव में शास्त्रीय संगीत के साथ ही लोक गीत तथा नृत्य बहुतायत प्रमाण में सुनने तथा देखने को मिलते है। इसके पूर्व श्रीकृष्ण के जन्म होने की बात सुनकर ढाडी और ढाडिन नन्द को बधाई देने आते है। कीर्तन में बधाई के पद विशेष रूप से राग धनाश्री और मालव में गाये जाते है। पुष्टि मार्गीय मंदिरों के संगीत परम्परा के राग विधान के अनुसार जन्माष्टमी तथा नन्दोत्सव में लगभग सभी रागों का प्रयोग किया जाता है किन्तु इस परम्परा के गर्भ रागों का प्रयोंग नही किया जाता है।

राधाष्टमी

इस सम्प्रदाय में राधा की विशेष मान्यता ना होने के कारण यह उत्सव अधिक धूमधाम से नही मनाया जाता। कीर्तनों में केवल राधा जन्म के पदों को गाया जाता है। इन उत्सवों के अतिरिक्त, दान एकादशी, वामन द्वादशी, दशहरा शरदोत्सव, दीपावली, अन्नकूट, प्रबोधिनी, गोस्वामी का जन्म उत्सव, मकर संक्राती, बसंत पंचमी, श्रीनाथ जी का पाठोत्सव, होलिकांष्टक, कुंज एकादशी, होली डोल उत्सव, संवत्सर उत्सव, गणगौर रामनवमी, महाप्रभु जी का जन्म उत्सव अक्षय तृतीया, नृसिंह जयंती, स्नान यात्रा, रथ यात्रा, हिन्डोले आदि उत्सव विशेष है। इन सभी में होलिकाष्टक जो फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से प्रारम्भ होता है। इसका विशेष महत्व है तथा संगीत की दृष्टि से इसको विशेषता प्राप्त है। राग वसन्त का समय समाप्त होने के पश्चात् यह संक्रान्त काल होता है। इस उत्सव में होली धमार के कीर्तन गाये जाते है। यह समय समशीतोष्ण रहता है।

अतः होली धमार के कीर्तन पुष्टि मार्गीय प्रणाली के गर्म व ठंडे प्रकृति के रागों में गाये जाते है। साथ ही इस सम्प्रदाय में प्रयोग होने वाले वाद्यों का वादन भी किया जाता है इनमें ढफ, चंग और उपंग वाद्य विशेष उल्लेखनीय है। उपरोक्त वार्षिक विशेष उत्सवों के अतिरिक्त अधिक मास जो कि एक वर्ष के अंतर से प्रत्येक

तीसरे वर्ष आता है का भी विशेष स्थान है। विविधता की दृष्टि से यह मास विशेष महत्वपूर्ण रहता है तथा प्रतिदिन मंदिरों में गाये जाने वाले संगीत में परिवर्तन होता रहता है जो विशेष विविधता लिए होता है।

संदर्भ

1. प्रो. सत्यभान शर्मा– पुष्टि मार्गीय मंदिरों में संगीत परम्परा, हवेली संगीत।
2. ड़ॉ. नीरा शर्मा– अष्टछाप संगीत –एक विश्लेषण।
3. ध्रुपद और हवेली संगीत– भारतीय राग, 2013